महिन्याचा विचार

राष्ट्रीय आचार संहिता

१) देशभक्ती – हमारे लिए अपनी मातृभूमि भारत का स्थान सबसे प्रथम सबसे उँचा होना चाहिए। देश की भलाई में हमारी भलाई है। इसलिए अपने देश भारत के लिए हम अपना जीवन तक दे देने लिए प्रसन्नता से तैयार रहें। हमें अपने बच्चों के तथा परिवार के अन्य सब सदस्यों के मन में देश–भक्ति की भावना तथा अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति प्रेम और सेवा की भावना भरनी चाहिए।

२) कर्तव्य – हमारा पहला और मुख्य कर्तव्य भगवान और सद–आचरण के प्रति है। नेक जीवन जीना हमारे राष्ट्र की सबसे मूल्यवान और उत्तम सेवा है क्योकि इससे मातृभूमि के गौरव में वृद्धि होगी।

३) चरित्र – चरित्र सबसे बडा धन है। एक शुद्धी और भ्रष्ट न होने वाला नागरिक हमारे देश की सबसे प्रथम और अधिक महत्व देना होगा। हमारे राष्ट्र के भलाई और उसकी भावी सुदृढता इसी पर निर्भर करती है।

४) स्वास्थ्य – स्वास्थ्य सफलता का आधार है। स्वास्थ्य ही सच्चा धन है। चरित्र के बाद यही सबसे बडी राष्ट्रीय सम्पत्ति है। आदर्श नागरिक होने के नाते राष्ट्र के प्रति हमारा मुख्य कर्त्तव्य है आपने चरित्र का निर्माण और स्वास्थ्य की रक्षा करना।

५) सदगुण–आइए हम सब मिल क जुआँ खेलना, शराब पीना, नशीली दवाओं का सेवन, धुम्रपान, पान खाना इत्यादि दुव्यर्यसनों को नष्ट कर दें। हम घुसखोरी, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, अनैतिकता, बेईमानी और

दुराचरण जैसी बुराइयों को जड से उखाड दें। अपने राष्ट्र के प्रति विश्वासघात एक अपराध है और एक राष्ट्रविरोधी अक्षम्य दोष है।

६) सार्वजनिक सम्पत्ति – नागरिकों! हम समस्त सार्वजनिक सम्पत्ति के रक्षक है। राष्ट्र की सम्पत्ति को हम बिगाडे नही उसका दुरूपयोग न करें। उसकी चोरी न करे। या उसे नष्ट न करें। हम प्रेमपूर्वक और सावधानी से उसकी रक्षा करें। अपने देश को हम स्वच्छ और निर्मल रखें। यह हमारा पावन कर्तव्य है।

७) एक ही परिवार – सभी नागरिक हमारे भाई हैं भाईचारे की इस भावना को हम हृदय से अनुभव करें। हम एक –दूसरे को प्रेम करें और एक होकर ही रहें। क्योंकि हम एक ही परिवार है।

८) धर्म – सभी धर्मो पन्थों और मतों के प्रति हम समान आदर की भावना रखें। सब धर्मो के अनुयायियों को हम अपने ही भाई मान कर प्रेम करें। दूसरों से हम वैसा ही व्यवहार करें, जैसा व्यवहार करें, जैसा व्यवहार हम उनसे अपने प्रति चाहतें हैं। सभी सम्प्रदायों को परस्पर प्रेम के बन्धन में कर मिलकर रहना चाहिए।

९) उग्रतावर्जन – प्रत्येक परिस्थिती में, किसी भी मूल्य पर हर प्रकार की उग्रता और घृणा से बचें। क्योंकि यह हमारे राष्ट्र के निर्मल नाम पर कलंक है। यह हमारी अन्तरात्मा को नष्ट कर देने वाली और हमारे देश की भलाई और उन्नति को अत्यधिक हानि पहुँचाने वाली है यह हमारे राष्ट्र के आदर्श पूर्णरूप से प्रतिकूल और विरूद्ध है।

१०) मितव्यय – अपने जीवन में सादा जीवन और उच्च विचार का सिद्धांन्त अपनायें। असंयमी न बने। हम बरबाद करने से बचें। हम मितव्ययिता – कर्म खर्च का अभ्यास करें। जो कुछ हमारे पास है, उसमें अपने कम भाग्यशाली साथी नागरिकों को सहभागी – हिस्सेदार बनायें। यह एक ऐसा राष्ट्रीय गुण है। जिसकी आज हमारे भारत को अत्यन्त आवश्यकता है।

११) कानून – हम कानून के शासन का आदर करें और सामाजिक न्याय को बनायें रखें। इसी में हमारे देश की भलाई की तथा आज और कल के और भी अधिक अच्छे भारत की ओर क्रमानुसारी प्रगति की गारन्टी निहित है।

१२) अहिंसा – अहिंसा हमारा सबसे उत्तम गुण है – अहिंसा परमो धर्म: करूणा एक दिव्य गुण है। पशु–पक्षियों की सुरक्षा करना हमारा पावन कर्तव्य है। यह भारत देश की विशेष शिक्षा है। हम प्राणी मात्र के प्रति दयावान हों और इस प्रकार सच्चे भारतीय बनें प्रयत्नपूर्वक, पशुओं के प्रति करूणा की साकार मूर्ति बनें। अपने दैनिक और कर्मो में करूणा और भलाई को अपनायें।

१३) जैविक परिपार्श्व और पर्यावरण – मानव और प्रकृति अलग नही किये जा सकते है। मनुष्य और उसका प्राकृतिक पर्यावरण परस्पर जुडे हुए है और दोनों एक दुसरे पर निर्भर है। प्रकृति की प्रत्येक वस्तु की हमारी सुरक्षा और हमारे पोषण में सहायता है। अंत:आइए हम प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करें। जैविक पर्यावरण सन्तुलन बनायें रखने में सहायता देना हमारा कर्तव्य है। हमारे सुरक्षित जीवन निर्वाह और सर्वतामुखी

कल्याण के लिए यह अनिवार्य है। सार्वजनिक स्थानों को प्रदुषित करना तथा देश के जल और वायु को प्रदुषित करना राष्ट्रीय अपराध है। अतीत में की गयी गल्तियों को हमें सुधारना होगा।

१४) एकता – देश के लोक जितने अधिक एक हो कर रहेंगे बाधाओं को पार करने और संकटों का सामना करने की उनकी क्षमता उतनी ही अधिक बढेगी। एक होने से हम रह सकेंगे और अलग होने से हमारा पतन होगा। वर्तमान के भारत पर यह तथ्य विशेष रूप से लागू होता है। इसलिए अपने सभी देशवासियों के साथ हम घनिष्ठ समन्वय और प्रेमपूर्ण सद्भावना से रहे। हमारा देश प्रेम का अर्थ है – हमारो देशवासियों के प्रति प्रेम। अपनी मातृभूमि भारत के प्रति एक भारतीय नागरिक जो अर्पण कर सकता है, उनमें से यही सबसे अधिक अमूल्य सेवा है। अपने देश को सुदृढ और अभेद्य बनाने के लिए एकता ही अत्याधिक अत्यावश्यकता है।

१५) शिक्षा – हमारी शिक्षा – प्रणाली में भारत की महान संस्कृति उसके महान आदर्शो श्रेष्ठ मूल्यों को और जिने के सिद्धतों के सम्बन्ध में मूलभूत ज्ञान देना सम्मेलित होना चाहिए हमे अपनी शिक्षा को हमारे युवाओं और विद्यार्थीयों के जीवन के गुणवत्ता को पुष्ठ करने और बढाने वाली बनना होगा। यह हमें सच्चे भारतीय बनाने वाली होनी चाहिए।

दिव्य जीवन संघ, पुणे शाखा वृत्तांत

* जानेवारी महिन्याचा सत्संग डॉ. आनंद राव यांच्या घरी दि. ६ रोजी संपन्न झाला.
* दिव्य जीवन या आपल्या मासिक पत्रिकेचा नववर्ष अंक परिवारातील सदस्यांना वितरीत करण्यात आला.

पुणे शाखेचा पत्ता

श्री.नितीन देशपांडे
'ईशावास्य' प्लॉट नं. ४९/सायंतारा,
डी.एस.के. विश्व, धायरी,
पुणे ४११०६८, मो.नं. ९८५०९३१४१७

बुक पोस्ट

प्रति

दिव्य जीवन

वर्ष १४/अंक २
फेब्रुवारी २०१९

राष्ट्रीय वर्तन संहिता

आजच्या गढूळलेल्या, प्रदुषण आणि मत–मतांतरे असलेल्या वातावरणात स्वामीजींनी आपणा सर्वांना एक आदर्श वर्तनसंहिता सुचविली आहे. त्याचे पालन आपण सर्वांनीच करणे अभिप्रेत आहे. राष्ट्राप्रती आपण प्रतिबद्धता दाखवावी आणि स्वत:च्या पातळीवर शक्य होईल तितके राष्ट्रीय वर्तन अंगी बाणवावे हे स्वामीजींना अभिप्रेत होते. ही संहिता (Code of Conduct) शाळाशाळांमध्ये पोहोचावी असे त्यांना वाटायचे. दिव्य जीवन संघाच्या पुणे शाखेने पूर्वी या वर्तन संहितेचे मुद्रण करून वितरण केले होते. नववर्षानिमित्त हा संकल्प करू या का?